CH.CHARAN SINGH COLLEGE OF EDUCATION & TECHNOLOGY

SADARPUR MEERUT

SESSION -2023 - 2024

B.Ed- Ist year

NAME - Kirtika Chaudhary /24104587

CLASS - B.Ed. Ist year

FILE NAME – Audio Visual Equipments.

Roll No.- 240562000030

SUBMITTED TO

Dr. Raj Rani

SUBMITTED BY -

Kirtika Chaudhary

CH. CHARAN SINGH UNIVERSITY MEERUT

Scanned with OKEN Scanner

wave

TOPIC ________________ DATE ________

S.No.	Topic	Sign.
01.	श्रव्य - दृश्य सामग्री परिचय ।	
02.	श्रव्य - दृश्य सामग्री का अर्थ ।	
03.	श्रव्य - दृश्य सामग्री की परिभाषाएं।	
04.	श्रव्य - दृश्य सामग्री वर्गीकरण ।	
05.	श्रव्य - दृश्य सामग्री उद्देश्य ।	
06.	श्रव्य - दृश्य सामग्री गुण एवं विशेषताएं।	
07.	श्रव्य - दृश्य सामग्री महत्व, विशेषता एवं आवश्यकता ।	
08.	श्रव्य - दृश्य सामग्री चयन	
09.	श्रव्य सामग्री - रेडियो	
10.	दृश्य सामग्री - श्यामपट्ट	
11.	दृश्य - श्रव्य सामग्री कम्प्यूटर	

CREATIVE Teacher's Signature ________

Scanned with OKEN Scanner

wave

TOPIC ____________________ DATE __________

अभिस्वीकृति

मैं अपने अध्यापक को धन्यवाद करना चाहूंगी जिन्होंने मुझे इस विषय पर परियोजना बनाने का अवसर प्रदान किया।

मैं अपने सहपाठियो, गुरुजनो एवं माता-पिता को भी धन्यवाद करूंगी जिन्होंने मुझे सीमित समय सीमा के भीतर इस परियोजना को अंतिम रूप देने मे मेरी मदद की है।

CREATIVE Teacher's Signature __________

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC ______ DATE ______

Audio-Visual Aids

परिचय -

अधिगम की परिस्थितियों का सृजन करने के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये सम्प्रेषण शिक्षण - युक्तियों तथा आव्यूह का चयन किया जाता है। इनको प्रभावशाली बनाने मे दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के प्रयोग से अधिगम की परिस्थितयो को अधिक प्रभावशाली रूप मे उत्पन्न किया जा सकता है और उद्देश्यो की अधिकतम प्राप्ति की जा सकती है। इसलिए शैक्षिक तकनीकी मे दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के उपयोग को हार्डवेयर आयाम माना जाता है।

छात्रों मे विज्ञान के अध्ययन मे रुचि उत्पन्न करने व ज्ञान को स्थाई बनाने हेतु विज्ञान अध्यापक को अनेक प्रकार के साधनों का प्रयोग करना पडता है। अतः वे साधन जो अध्यापक की उद्देश्यो की पूर्ति मे सहायक होते है। सहायक साधन या शिक्षण सहायक सामग्री कहलाते है। इसको दृश्य-श्रव्य सामग्री (Audio-Visual Aids) के नाम से भी जाना जाता है।

TOPIC ______ DATE ______

श्रव्य - दृश्य सामग्री का अर्थ

श्रव्य - दृश्य सामग्री का तात्पर्य शिक्षण के उन साधनों से है जिनके प्रयोग से बालको की श्रव्य तथा दृश्य की ज्ञानेन्द्रिय क्रियाशील हो जाती है और वे पाठ के सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा कठिन से कठिन शिक्षण के प्रकरणो सरलतापूर्वक समझ पाते है। श्रव्य - दृश्य सामग्री के अन्तर्गत चलचित्र अथवा सिनेमा, समाचार सम्बन्धी फिल्म तथा दूरदर्शन आदि। उन सभी साधनो को सम्मिलित किया जाता है जिनकी सहायता से बालको की पाठ मे रूचि उत्पन्न की जा सके तथा वे सरलतापूर्वक समझ सके।

श्रव्य - दृश्य सामग्री की परिभाषाएँ

डैन्ट ई॰सी॰ के अनुसार - "श्रव्य दृश्य सामग्री ऐसी सामग्री है जो कक्षा-कक्ष या अन्य शिक्षण परिस्थितियो मे लिखित या बोले जाने वाली पाठ्य सामग्री को समझने मे लाभ पहुँचाती है।"

बर्टन के अनुसार - "श्रव्य - दृश्य सहायक वे है, जिनके द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को श्रव्य - दृश्य इन्द्रियों के द्वारा प्रोत्साहित किया जा सकता है।"

CREATIVE Teacher's Signature ______

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC ______________________ DATE ______________

दृश्य - श्रव्य सामग्री का वर्गीकरण

इन्द्रियो के प्रयोग के आधार श्रव्य - दृश्य सामग्री को मोटे तौर पर निम्न तीन भागो मे विभाजित किया जा सकता है -

(1) श्रव्य सहायक सामग्री - रेडियो, टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन, भाषा प्रयोगशाला आदि।

(2) दृश्य सहायक सामग्री - वस्तुएं, मानचित्र, चित्र, आकृतियां, ग्राफ, रेखाचित्र आदि।

(3) दृश्य - श्रव्य सहायक सामग्री - दूरदर्शन, चलचित्र, नाटक, अभिनय, विडियो कैसट आदि।

श्रव्य - दृश्य सामग्री के उद्देश्य

1. शिक्षण को प्रभावशाली बनाना।
2. विषय - वस्तु मे रूचि उत्पन्न करना।
3. पाठ्य सामग्री को सरल बनाना।
4. छात्र अवधान को केन्द्रित करना।
5. छात्रों को क्रियाशील बनाना।
6. छात्रो को सृजनात्मक का ज्ञान।
7. छात्रो मे कौशलो का विकास करना।
8. छात्रो को अन्त: क्रियाशील बनाना।

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC ______ DATE ______

दृश्य-श्रव्य सामग्री के गुण एवं विशेषताएँ

श्रव्य-दृश्य सामग्री के गुण एवं विशेषताएँ निम्नलिखित है-

1) श्रव्य-दृश्य सामग्री उद्देश्य, विषय-वस्तु तथा छात्रों के पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित होनी चाहिए।

2) सहायक सामग्री समय एवं धन आदि दृष्टिकोण से मितव्ययी होनी चाहिए।

3) सहायक सामग्री में परिशुद्धता होनी चाहिए।

4) सहायक सामग्री से छात्रों को सीखने की प्रेरणा मिलती है।

5) सहायक सामग्री रोचक होनी चाहिए।

दृश्य-श्रव्य सामग्री का महत्व एवं विशेषता, आवश्यकता

दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का महत्व एवं आवश्यकताएँ निम्नलिखित है-

1) श्रव्य-दृश्य सामग्री ऐसी अनुदेशात्मक युक्तियाँ है जिनको सुना एवं देखा जा सकता है।

2) इनके प्रयोग से समय व ऊर्जा की बचत होती है तथा बालको का अधिगम शुद्ध व स्थाई होता है।

3) इनके प्रयोग से बालको प्रोत्साहन व उद्दीपन मिलता है।

CREATIVE Teacher's Signature ______

TOPIC DATE

(4) इनके प्रयोग से मौखिक कार्य व अर्थहीन शब्दो का प्रयोग कम होता है।
(5) इनके प्रयोग से बालको को प्रत्यक्ष अध्ययन प्राप्त होता है।
(6) ये छात्रो को वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने मे अवसर प्रदान करते है।

श्रव्य-दृश्य सामग्री का चयन

श्रव्य-दृश्य सामग्री का चयन निम्न प्रकार होता है -
(1) श्रव्य-दृश्य सामग्री छात्रो की रुचियो, आवश्यकताओ तथा मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए।
(2) सहायक सामग्री अधिगम को प्राप्त करने के उद्देश्य से होनी चाहिए।
(3) जो सामग्री प्रयोग मे लायी जाये उसको छात्रो के पूर्वज्ञान से सम्बन्धित कर देना चाहिए।
(4) सहायक सामग्री कम खर्चीली होनी चाहिए।
(5) इनके प्रदर्शन के साथ-साथ कक्षा व्यवस्था तथा अनुशासन पर भी ध्यान देना चाहिए।

Teacher's Signature

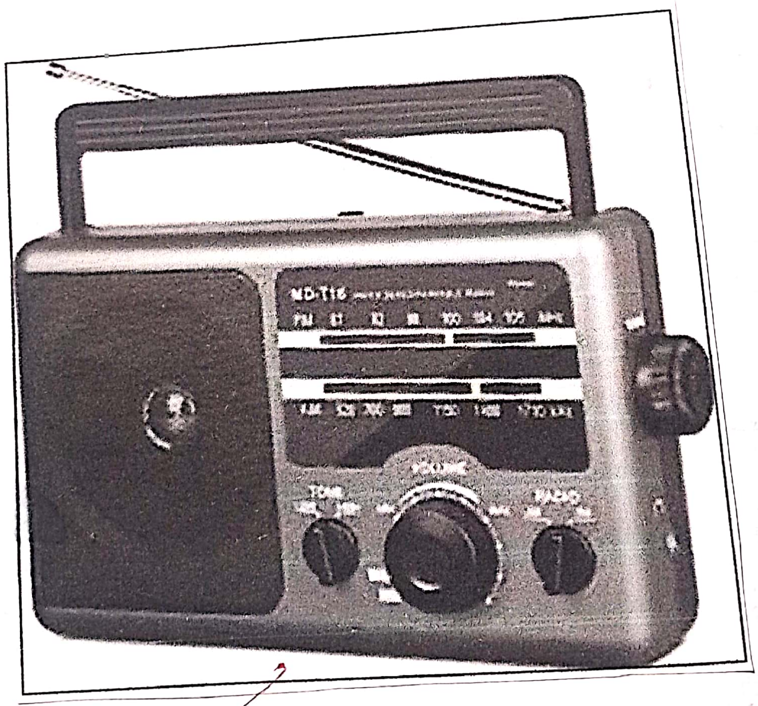

Good

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC DATE

Audio Aids

श्रव्य सामग्री ऐसी सहायक सामग्री होती है, जिसमे केवल श्रवण इन्द्रियों अर्थात कानों का प्रयोग होता है। श्रव्य सामग्री मे निम्न सहायक सामग्री आती है -

① रेडियो ② ग्रामोफोन
③ टेप रिकॉर्डर ④ रिकॉर्डेड सामग्री

RADIO (रेडियो)

रेडियो के जन्म की कहानी सन (1885)ई॰मे आरम्भ हुई है। आधुनिक जीवन मे रेडियो का विकास इतना अधिक हो गया है कि अब हमारे लिए यह अब आवश्यकता की वस्तु बन गया है। रेडियो द्वारा दूर-दूर रहने वाले बालकों को साथ-साथ ही आधुनिकतम घटनाओं तथा नवीनतम सूचनाओ का ज्ञान प्राप्त होता है।
संक्षेप मे -"रेडियो द्वारा बालकों को संसार के प्रत्येक राष्ट्र तथा उसमे निवास करने वाले सभी लोगों की क्रियाओं मे रुचि उत्पन्न हो जाती है।"
आकाशवाणी द्वारा रेडियो पर प्रसारित होने वाले पाठों की विस्तृत सूचना समय से बहुत पहले अनेक प्रकाशनों के माध्यम से दी जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC DATE

विद्यार्थियों को रेडियो पाठ के लिए तैयार करना - विद्यार्थियों को रेडियो पाठ के लिए तैयार करना यदि रेडियो पाठ भूगोल विषय पर है तो विद्यार्थियों को भूगोल कक्ष मे ही पाठ सुनने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। यदि रेडियो-पाठ के साथ मानचित्र, ग्लोब उपकरण आदि के उपयोग करने के निर्देशन हो तो उनको भी व्यवस्थित कर लेना चाहिए। कक्षा मे ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि रेडियो प्रसारण शान्ति से ठीक समय पर सुना जा सके।

रेडियो पाठ को श्रवण करना - रेडियो पाठ को श्रवण करते समय निम्न बिन्दुओ पर ध्यान देना चाहिए -

1. शिक्षार्थियों को रेडियो के समीप सीधे बैठना चाहिए।
2. रेडियो प्रसारण सुनते समय बीच मे प्रश्न पूछने व बाते करने की स्वीकृति नही देनी चाहिए।
3. महत्वपूर्ण घटनाओ के नामो को अपनी पुस्तिका मे अंकित किया जाना चाहिए।
4. जिज्ञासा के रूप मे उभरने वाले प्रश्नो को यथा-सम्भव अपनी पुस्तिका मे अंकित किया जाना चाहिए।

CREATIVE Teacher's Signature

Scanned with OKEN Scanner

रेडियो पाठ का प्रस्तुतीकरण -

रेडियो पाठ पूरा हो जाने के पश्चात यह आवश्यक है कि शिक्षक पाठ से सम्बन्धित आवश्यक प्रश्न पूछे, शिक्षार्थियों को स्पष्टीकरण हेतु प्रश्न पूछने का अवसर दे तथा उन तथ्यों को स्पष्ट करे जो मुख्य रूप से पाठ मे आये थे।

रेडियो पाठ का मूल्यांकन -

यह स्पष्ट ही है रेडियो पाठ का उपयोग शिक्षण की प्रभावोत्पादकता मे वृद्धि करने के लिये किया जाता है। अतः यह देखना आवश्यक है कि शिक्षार्थी पाठ के उद्देश्यों को प्राप्त किस सीमा तक कर पाए है। यदि मूल्यांकन के पश्चात शिक्षक कोई कमी का अनुभव करे तो उसे यह विचार करना चाहिये कि वह किस कमी के कारण है।

wave
TOPIC
DATE
CREATIVE
Teacher's Signature
Scanned with OKEN Scanner

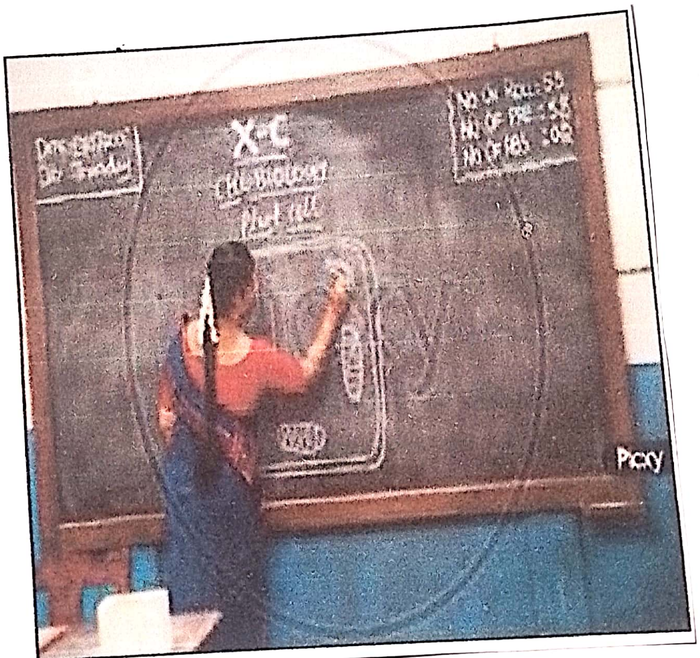

Good

Scanned with OKEN Scanner

wave

TOPIC ______ DATE ______

Visual Aids (दृश्य सामग्री)

यह वह सामग्री होती है जिसमे दृश्य अर्थात आँखो का प्रयोग होता है। इस प्रकार की सामग्री बालको को देखकर सीखने मे सहायता प्रदान करती है। कुछ दृश्य सामग्री निम्न है -

1. श्यामपट्ट
2. चार्ट
3. मॉडल
4. रेखाचित्र
5. ग्राफ
6. स्लाइडस

श्यामपट्ट Black Board

गणित शिक्षण की भाँति विज्ञान शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए कक्षा मे श्यामपट्ट का प्रयोग आवश्यक है। श्यामपट्ट काले रंग का तथा चिकना होता है। जिससे चॉक द्वारा लिखे गए अक्षर छात्रो को स्पष्ट रूप मे दिखाई दे। इसका प्रयोग शिक्षा प्रारम्भ से उच्च शिक्षा तक चलता है। श्यामपट्ट के अभाव मे विभिन्न तथ्यो, प्रत्ययो नियमो सूत्रो आदि को स्पष्ट करना कठिन कार्य हो जाता है।

श्यामपट्ट के महत्व को निम्न बिन्दुओ द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है -

1. सम्बान्धित चित्र या आकृति बनाकर विषय-वस्तु को स्पष्ट किया जा सकता है।

CREATIVE

Teacher's Signature ______

TOPIC ______ DATE ______

(2) इस पर बनाये गए चित्रो के माध्यम से पूरी कक्षा का ध्यान पाठ की ओर केन्द्रित किया जा सकता है।

(3) रेडियो, पाठ, दूरदर्शन फिल्म प्रदर्शन, ओवर हेड प्रोजेक्टर जैसे - श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग मे भी श्यामपट्ट की आवश्यकता होती है।

(4) पढाई गई विषय वस्तु के मुख्य बिन्दुओ को श्यामपट्ट पर दोहराना और छात्रो का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है।

श्यामपट्ट का प्रयोग

श्यामपट्ट के प्रयोग से छात्र ज्ञान ग्रहण करते समय कक्षा मे अधिक सक्रिय रहते है। श्यामपट्ट का प्रयोग निम्न परिस्थितियो मे किया जा सकता है -

(1.) विभिन्न पदो को परिभाषित करने तथा व्याख्या करने के लिए।
(2.) अपनी पाठ योजना की रूपरेखा लिखते समय।
(3.) रेखाचित्र व रेखाकृतियो को बनाने के लिए।
(4.) नियम सिद्धान्त चार्ट ग्राफ सारणी आदि के लिए।
(5.) मुख्य बिन्दुओ (नियम, परिभाषा) आदि लिखते समय।
(6.) कक्षा मे कराए गए कार्य का मूल्यांकन करते समय।
(7.) छात्रो को गृहकार्य देते समय।

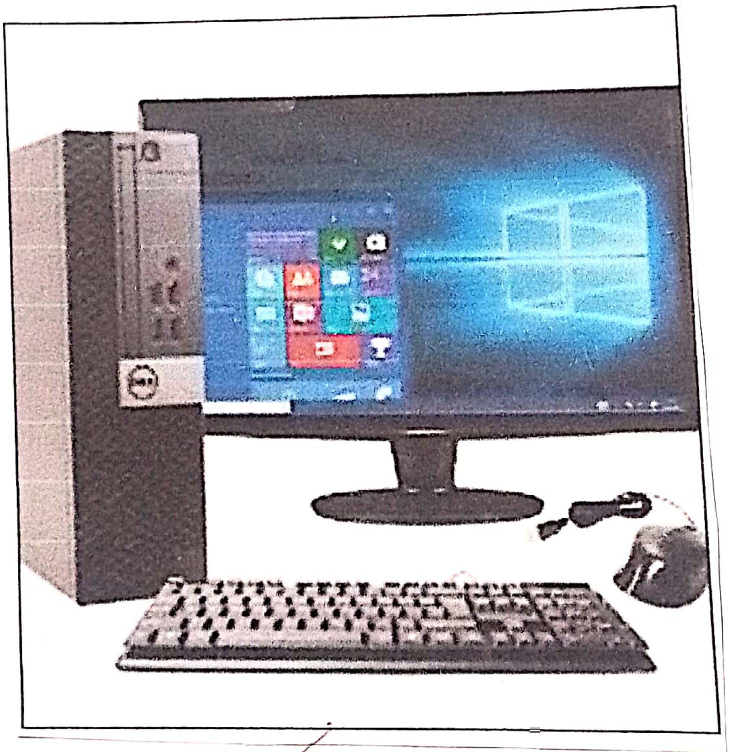

Good

Scanned with OKEN Scanner

TOPIC ______ DATE ______

Audio-Visual Aids

श्रव्य-दृश्य वह सामग्री होती है जिसमे श्रव्य व दृश्य दोनो ही इन्द्रियो का प्रयोग होता है यह सामग्री बालको को देखकर और सुनकर सीखने मे सहायता प्रदान करती है। इसके अन्तर्गत निम्न सामग्री आती हैं-

① टेलीविजन ② कम्प्यूटर ③ विडियोटेप
④ चलचित्र अथवा सिनेमा ⑤ औद्योगिक फिल्म

Computer कम्प्यूटर

आधुनिक युग की महत्वपूर्ण देन कम्प्यूटर है। कम्प्यूटर समय शक्ति एवं धन की दृष्टि से अधिक मितव्ययी अविष्कार है। मानव की सभ्यता की वृद्धि हुई है।

कम्प्यूटर का अर्थ एवं परिभाषा - कम्प्यूटर एक ऐसी विद्युत युक्ति, जो प्रदत सूचनाओ का भण्डार करती है तथा निर्देशो के अनुसार उनके विशेषण करके समय मे शुद्ध एवं विश्वसनीय परिणाम प्रस्तुत करती है।

कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Computer से हुई है उसका अर्थ गणना करना व गिनती करना है।

CREATIVE Teacher's Signature ______

TOPIC DATE

कम्प्यूटर का विकास

सन 1946 के बाद से आज तक कम्प्यूटर के विकास की प्रक्रिया सतत चलती है। कम्प्यूटर में प्रयोग किए गए इलेक्ट्रानिक पुर्जों के आधार पर कम्प्यूटर के विकास को पांच पीढ़ियों में बांटा गया है।

कम्प्यूटर दूरवर्ती अधिगम के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है। कम्प्यूटर छात्र के व्यवहार का विश्लेषण करते हैं।

कम्प्यूटर की उपयोगिता

कम्प्यूटर का उपयोग उद्योग, व्यापार, सेना तथा शिक्षा में किया जाता है। कम्प्यूटर ने मनुष्य की जटिल समस्याओं को सरल एवं सुगम बना दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का प्रयोग प्रमुख रूप से चार क्षेत्रों में अधिक किया जाता है।

1. शिक्षण तथा अनुदेशन में।
2. शिक्षा के शोधकार्यों में।
3. शिक्षा निर्देशन व परामर्श में।
4. परीक्षा प्रणाली।

TOPIC ______ DATE ______

कम्प्यूटर का उपयोग

ई-मेल, लेखांकन, सहयोग, पुस्तक प्रकाशन, जानकारी संजोना, शब्द संसाधन, दूर संचार, शिक्षा प्रसार, सिमुलेशन।

कम्प्यूटर के लाभ

1. यह संचार का सबसे अच्छा माध्यम है।
2. इसमे किसी भी संसाधन को साझा करने मे आसानी होती है।
3. यह सभी प्रकार की फाईल को साझा करने का बेहतरीन डिवाइस है।
4. यह एक सस्ता यंत्र है।
5. इस पर बहुत आसानी से कार्य किया जा सकता है।

कम्प्यूटर की हानियाँ

1. गलत तरीके से उपयोग करने मे समय की बर्बादी होती है।
2. आँखो की दृष्टि का कमजोर होना।
3. शारिरिक गतिविधियो मे कमी होती है।

M

CREATIVE

Teacher's Signature ______